

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमदध्यात्मरामायणे बालकाण्डे अहल्या कृतं

॥ श्रीरामस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीरामस्तोत्रम् ॥

अहल्योराच

अहो कृतार्थास्मि जगन्निरास ते
पादाब्जसंलग्नरजःकणादहम्।
स्पृशामि यत्पद्मजशङ्करादिभिः
रिमुग्यते रन्ध्रितमानसैः सदा ॥ 1 ॥

अहो रिचित्रं तव राम चेष्टितं
मनुष्यभारेण रिमोहितं जगत्।
चलस्यजस्रं चरणादिरर्जितः
सम्पूर्ण आनन्दमयोऽतिमायिकः ॥ 2 ॥

यत्पदापङ्कजपरागपरित्रगात्रा
भागीरथी भ्रूरिरीरिष्णुमुखात्पुनाति।
साम्फात्स एव मम दृग्निषयो यदास्ते
किं रण्यते मम पुराकृतभागधेयम् ॥ 3 ॥

मर्त्यावतारे मनुजाकृतिं हरिं
रामाभिधेयं रमणीयदेहिनम्।
धनुर्धरं पद्मरिशाललोचनं
भजामि नित्यं न परान् भजिष्ये ॥ 4 ॥

यत्पदापङ्कजरजः श्रुतिभिर्रिमुग्यं
यन्नाभिपङ्कजभरः कमलासनश्च।

যন্মাসাররসিকো ভগরান্পুরারিঃ
তং রামচন্দ্রমনিশং হৃদি ভারযামি ॥ 5 ॥

যস্যারতারচরিতানি রিরিঞ্চিলোকে
গায়ন্তি নারদমুখা ভরপদ্বজাদ্যাঃ।
আনন্দজাঞ্চপরিষিক্তকুচাগ্রসীমা
রাগীশ্বরী চ তমহং শরণং প্রপদ্যে ॥ 6 ॥

সোহযং পরাত্মা পুরুষঃ পুরাণ
একঃ স্বযংজ্যোতিরনন্ত আদ্যঃ।
মাযাতনুং লোকরিমোহনীযাং
ধত্তে পরানুগ্রহ এষ রামঃ ॥ 7 ॥

অযং হি রিশ্চৈরান্দুরসংযমানাম্
একঃ স্বমাযাগুণবিষিতো যঃ।
রিরিঞ্চিরিষ্ণরীশ্বরনাম ভেদান্
ধত্তে স্বতন্ত্রঃ পরিপূর্ণ আত্মা ॥ 8 ॥

নমোহস্ত তে রাম তরাঙিঘ্নপঙ্কজং
প্রিয়া ধৃতং রক্ষসি লালিতং প্রিয়াৎ।
আক্রান্তমেকেন জগত্ৰযং পুরা
ধ্যযং মুনীন্দ্রৈরভিমানরজিতৈঃ ॥ 9 ॥

জগতামাদিভূতস্তুং জগত্বং জগদাশ্রযঃ।
সর্বভূতেশ্বরসংযুক্ত একো ভাতি ভরান্পরঃ ॥ 10 ॥

ওংকাররাচ্যস্তুং রাম রাচামরিষযঃ পুমান্।
রাচ্যরাচকভেদেন ভরানের জগন্মযঃ ॥ 11 ॥

কার্যকারণকর্তৃৎফলসাধনভেদতঃ।

একো রিভাসি রাম ত্বং মাযযা বহুরূপযা ॥ 12 ॥

ৎরন্মায়ামোহিতধিযঃ ত্বাং ন জানন্তি তত্ত্বতঃ।

মানুষং ত্বাভিমন্যন্তে মাযিনং পরমেশ্বরম্ ॥ 13 ॥

আকাশরত্নং সর্বত্র বহিরন্তর্গতোহমলঃ।

অসঙ্গো হ্যচলো নিত্যঃ শুদ্ধো বুদ্ধঃ সদর্যযঃ ॥ 14 ॥

যোষিন্মুঢ়াহমজ্জাতে তত্ত্বং জানে কথং রিভো।

তস্মান্তে শতশো রাম নমস্কুর্যামনন্যধীঃ ॥ 15 ॥

দেব মে যত্র কুত্রাপি স্থিতাযা অপি সর্বদা।

ৎরৎপাদকমলে সজ্জা ভক্তিরেব সদাস্ত মে ॥ 16 ॥

নমস্তে পুরুষাধ্যক্ষ নমস্তে ভক্তরৎসল।

নমস্তেহস্ত হৃষীকেশ নারাযণ নমোহস্ততে ॥ 17 ॥

ভরভযহরমেকং ভানুকোটিপ্রকাশং

করধৃতশরচাপং কালমেঘারভাসম্।

কনকরুচিররস্মং রত্নরৎকুণ্ডলাঢ্যং

কমলরিশদনেত্রং সানুজং রামমীড়ে ॥ 18 ॥

স্তবৈরং পুরুষং সাক্ষাৎ রাঘবং পুরতঃ স্থিতম্।

পরিক্রম্য প্রণম্যাশু সানুজ্জাতা যযৌ পতিম্ ॥ 19 ॥

অহল্যযা কৃতং স্তোত্রং যঃ পঠেদ্ভক্তিসংযুতঃ।

স মুচ্যতেহখিলৈঃ পাপৈঃ পরং ব্রহ্মাধিগচ্ছতি ॥ 20 ॥

পুত্রাদ্যর্থৈ পঠেদ্ভক্ত্যা রামং হৃদি নিধায় চ।

সংরৎসরেণ লভতে রক্ষ্যা অপি সুপুত্রকম্ ॥ 21 ॥

सर्वाङ्कामानराप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः ॥ 22 ॥

ब्रह्मघ्नो गुरुतल्लगोहपि पुरुषः श्रेयी सुरापोहपि रा
मातृद्रातृरिहिंसकोहपि सततं भोगैकवद्भ्रातुरः।
नित्यं श्लोत्रमिदं जपन् रघुपतिं भक्त्या हृदिसुं स्मरन्
ध्यायन् मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः ॥ 23 ॥

॥ श्रीरामस्तोत्रं समाप्तम् ॥